ज्ञान दृष्टि

मुद्रा

7

मई 2020 अंक 7 शशिधर उज्ज्वल

प्रिय पाठकों,

'ज्ञान दृष्टि' का सातवां अंक 'मुद्रा' आपके समक्ष प्रस्तुत है। 'टीचर्स ऑफ बिहार' ज्ञान दृष्टि अंक के माध्यम से पाठ्यचर्या से जुड़ी किसी एक खास टॉपिक पर आपका ज्ञानवर्द्धन तथा रोचक तथ्यों को प्रस्तुत करने को प्रयासरत है। उम्मीद है यह अंक बच्चों और पाठकों के ज्ञानवर्द्धन में मददगार सिद्ध होगा।

पैसा समाज में व्यक्ति की हैसियत निर्धारित करता है। पैसा जिसे हम धन, दौलत, रुपया कहते हैं, व्यक्ति के सपनों को सजाने, पंख लगाने के लिए आवश्यक है। धन वह शक्ति है, जिसके रहने पर मनुष्य विपत्ति के समय अपने को सुरक्षित और बलशाली समझता है। इससे किसी व्यक्ति, समाज, देश या सभ्यता के समृद्धि का भी पता चलता है। धन समस्त जगत का मूल है। इसके बिना निर्धन मनुष्य का जीवन कष्टकारक हो जाता है। इसके बिना हम एक दिन भी नहीं गुजार सकते। गरीब व्यक्ति धनाभाव में अपनी इच्छा की कोई वस्तुएं नहीं खरीद सकता। देश की आर्थिक प्रगति का निर्धारण करने में भी मुद्रा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

मेहनत की कमाई का एक-एक पैसा कीमती होता है। इसी पैसे के लिये तो हम सभी दिन-रात पसीने बहाकर मेहनत-मजदूरी करते हैं। मनुष्य जन्म से मृत्यु तक पैसे के पीछे भागता है। इस अंक में हम पैसों यानी मुद्रा के बारे में चर्चा करेंगे। मानव सभ्यता के विकास के साथ एक-दूसरे के मदद की आवश्यता पड़ी। बदले में वस्तुओं के विनिमय की आवश्यकता ने मुद्रा प्रणाली को जन्म दिया। वस्तु विनिमय प्रणाली से लेकर आधुनिक मुद्रा व्यवस्था तक की विकास की यात्रा हम सभी इस अंक में करेंगे। इसके अलावे अलग-अलग देशों के मुद्रा के नामों से भी आप अवगत होंगे। बच्चे मुद्रा पर प्रचलित मुहावरे और लोकोक्ति का रसास्वादन भी कर सकेंगे।

आदि मानव को भोजन के अलावे, घर, वस्त्र, मनोरंजन तथा अन्य साधनों की आवश्यकता हुई। मनुष्य अकेले सारा काम नहीं कर सकता था। इसलिये कबीले या समुदाय में लोगों ने अपना कार्य बाँट लिया। कोई भोजन का प्रबंध करता, कोई घर बनाने का काम करता तो कोई वस्त्र बुनने का काम करता। मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वस्तुओं की अदला–बदली करने लगा।

चर्म मुद्रा–

प्राचीन काल में, जब मनुष्य शिकारी था, तब मनुष्य द्वारा पशुओं के खाल या चमड़े का प्रयोग मुद्रा के रूप में वस्तु विनिमय के लिए किया जाता था। रूस में भी पीटर महान के समय तक चमड़े की मुद्राओं का प्रचलन था। कनाडा के हडसन खाड़ी क्षेत्र में वस्तु विनिमय के लिए खालों का प्रयोग किया जाता था।

पशु मुद्रा–

बाद में, चारागाह युग में पशुओं का प्रयोग मुद्रा के रूप में किया जाने लगा। जिस व्यक्ति के पास ज्यादा पशु होता था, उसे समाज या कबीले का सबसे धनी व्यक्ति माना जाता था। ग्रीक सभ्यता के शुरू में बैल विनिमय के साधन के रूप में प्रयोग किये जाते थे। आज भी दक्षिणी सूडान में चरवाहा जाति के लोग अपनी सम्पत्ति गाय, बैल तथा बकरियों के रूप में मूल्य लगाते हैं। जर्मनी में भी बहुत समय तक पशुओं का मूल्य मापक के रूप में प्रयोग किया जाता था। जुर्माने या दण्ड का भुगतान भी पशुओं के रूप में लगाया जाता था।

वस्तु मुद्रा–

मनुष्य जब कृषक बन गया और अपनी जरूरत से ज्यादा अनाजों की उपज करने लगा, तब अनाज का प्रयोग भी मुद्रा के रूप में किया जाने लगा। इन्हें वस्तु मुद्रा कहा जाता है। अब मनुष्य शेष आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वस्तुओं की अदला–बदली करने लगा। उदाहरण के लिए, किसान को हल, बैलगाड़ी, वस्त्र घर आदि की जरूरत होती थी तो वह लोहार से हल बनवाता और बदले में उसे अनाज दे दिया करता था। बढ़ई से लकड़ी की गाड़ी तथा लकड़ी के अन्य सामान बनवाता तथा उसे भी बदले में अनाज दे दिया करता। इस प्रकार, किसान को अपनी जरूरत की चीजें मिल जाती थी तथा लोहार और बढ़ई को भी खाने के लिए अनाज की व्यवस्था हो जाती थी। उसी प्रकार, लोहार को चमड़े के किसी वस्तु की आवश्यकता होती थी तो वह चर्मकार से उस वस्तु को खरीद लेता था। इसके बदले वह उसे लोहे से निर्मित कोई वस्तु या कहीं से प्राप्त अनाज दे देता था। अनाज की मात्रा या वस्तुओं की संख्या का निर्धारण परम्परा या आपसी बातचीत से तय होते थे। इस प्रणाली को **वस्तु विनिमय प्रणाली** (Barter system) कहा जाता था।

क्या आप जानते हैं? अमेरिका के मेरीलैंड नामक स्थान पर 1932 ई. में मकई को वैधानिक मुद्रा घोषित कर दिया गया।

गाँव–देहात में अभी भी यही रिवाज प्रचलित है। गाँवों के लोग धान, चावल या अनाज बेचकर या बदले में अपनी जरूरत की चीजें जैसे साबुन, तेल, मसाले, मिठाईयाँ, सोनपापड़ी, मूँगफली या खेल–खिलौने आदि खरीद लेते हैं। इस प्रकार, जब किसी वस्तु की खरीद–बिक्री दूसरी वस्तु के बदले किया जाता है तो उसे वस्तु विनिमय प्रणाली कहा जाता है।

लेकिन वस्तु विनिमय प्रणाली में कई समस्याएं आने लगीं। मान लीजिए कि एक किसान के पास वस्तु के विनिमय के लिए गेहूँ है। उसे एक धातु के बर्तन की आवश्यकता है। वह बर्तन विक्रेता के पास जाता है लेकिन बर्तन विक्रेता यह कहते हुए बर्तन देने से मना कर देता है कि उसे गेहूँ की कोई जरूरत नहीं है। बदले में कुछ और चीजें दे। तो किसान के पास एक समस्या उत्पन्न हो गई। ऐसी ही समस्या एक और समस्या थी, वस्तुओं के भण्डारण की। वस्तु विनिमय प्रणाली में संचय अर्थात् जमा करके रखने को कार्य केवल वस्तुओं के रूप में होता था। वस्तुओं को अधिक दिनों तक संचय करने में सड़ने–गलने या नष्ट होने का डर रहता था। यदि संचित धन अनाज के रूप में हो और वर्षा, आग या कीट के कारण खराब हो जाये तो सारा संचित धन नष्ट हो जाएगा। यदि धन को पशुओं के रूप में संचय हो और बीमारी के कारण मर जाये तो सारा संचित धन नष्ट हो जायेगा। साथ ही, पशुओं के रख–रखाव में अतिरिक्त खर्च और मेहनत भी होना निश्चित था। साथ ही किसी छोटे वस्तु के लिए उसे काट कर तो दिया नहीं जा सकता था। ऐसी सम्पत्ति को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने में भी परेशानियों का सामना करना पड़ता था।

ऐसी ही समस्या सभी मनुष्यों को होने लगी तब धीरे–धीरे यह समझ विकसीत होने लगी कि कोई ऐसी वस्तु या माध्यम होना चाहिए जिससे की लेन–देन में आसानी हो, जिसे लम्बे समय तक संचय किया जा सके, जिसे ढ़ोने, ले–जाने, ले–आने में आसानी हो। इसी सहुलियत के लिए **मुद्रा** का चलन शुरू हुआ। इससे व्यापार में सुविधा होने लगी।

प्राचीन समय में, व्यापार के लिए अनाज के अलावे विभिन्न वस्तुओं का उपयोग मुद्रा के तौर पर किया जाता था। जैसे भारत में कौड़ी, चीन में चावल, पापुआ न्यू गिनी में कुत्ते के दाँतों तथा घाना में क्वार्टज कंकड़ों का प्रयोग मुद्रा के तौर पर किया जाता था। इतना ही नहीं कई जगहों पर तो लोग व्हेल के दाँत, सालोमन द्वीप पर पक्षियों के पंख, यूरोप में बादाम, स्विट्जरलैण्ड में अण्डे, मैक्सिको और सुमात्रा में कौड़िया या सीप का प्रयोग भी मुद्रा के तौर पर करते थे।

जब किसी वस्तु की खरीद–बिक्री मुद्रा अथवा रुपये–पैसे के माध्यम से किया जाता है तो उसे मुद्रा विनिमय प्रणाली कहा जाता है।

चाय मुद्रा–

नौवीं से 20वीं शताब्दी के मध्य चीन, रूस, मंगोलिया, तिब्बत और साइबेरिया में चाय के पत्तियों का इस्तेमाल वस्तु विनिमय के लिए किया जाता था। चाय की गुणवत्ता तथा वजन के हिसाब से अलग–अलग पैकेट तैयार किये जाते थे। इन्हें ऊँटों या याक पर रखकर व्यापार के लिए दूसरे देशों में भी ले जाया जाता था। इन देशों में इन चाय मुद्राओं के बदले तलवार, घोड़ा और अन्य बहुमूल्य वस्तुओं का विनिमय किया जाता था।

मुद्रा –

मुद्रा शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के '***मोनिटा***' शब्द से हुई है। जबकि 'पैसे' शब्द की उत्पत्ति 'पेक्स' से हुई मानी जाती है जिसका शाब्दिक अर्थ है– 'पशु धन'। मुद्रा धन के उस स्वरूप को कहते हैं जिससे दैनिक जीवन की वस्तुएं खरीदी या बेची जाती हैं। इसके अंतर्गत सिक्का और नोट दोनों आते हैं।

तम्बाकु मुद्रा–

लगभग 200 वर्षों पहले तक अमेरिका के विभिन्न प्रांतों में तम्बाकु का इस्तेमाल मुद्रा के तौर पर किया जाता था। वर्ष 1618 में 'तम्बाकु मुद्रा' का प्रयोग अमेरिका के वर्जिनिया प्रांत में आधिकारिक तौर गर्वनर ने कर्जों के भुगतान में 3 शिलिंग प्रति पौंड के दर से स्वीकार करने का हुक्म दिया था। 18वीं शताब्दी के मध्य में 'तम्बाकु मुद्रा' को हटा दिया गया।

दास मुद्रा–

एक समय मिस्र और रोम में तो लोग अपने गुलामों या दासों को व्यापार के तौर पर इस्तेमाल करने लगे थे। उस समय जो व्यक्ति दासों के रूप में खरीदे जाते थे उनका मूल्य बैलों में आंका जाता था। जैसे एक कैदी स्त्री जो कि शिल्पकला में निपुण थी, का मूल्य चार बैलों के बराबर लगाया गया था।

धात्विक मुद्रा–

धातुओं के आविष्कार के बाद ताँबा, लोहा, चाँदी, सोना, कांसा आदि सभी धातुओं का प्रयोग मुद्रा बनाने के काम में लाया जाने लगा। यह अपेक्षाकृत अधिक टिकाऊ और संग्रह में सुविधाजनक था।

पहले सिक्कों का मतलब सिर्फ धातुओं का टुकड़ा होता था। आगे चलकर उनकी नाप और तौल स्थिर हो गई। सिक्कों को तभी ढालने का सिलसिला शुरू हुआ। सिक्कों पर पहचान के लिए कुछ चिह्न बनाने लगे। मौर्यकाल तक भारतीय सिक्कों पर भी विभिन्न प्रकार के चिह्न– पशुओं की, पक्षियों की और ज्यामितीय आकृतियाँ ही अंकित हैं। प्रारंभ के सिक्कों के मध्य एक छेद कर दिया जाता था जिससे एक साथ धागे में पिरोकर सिक्कों को रखा जा सके।

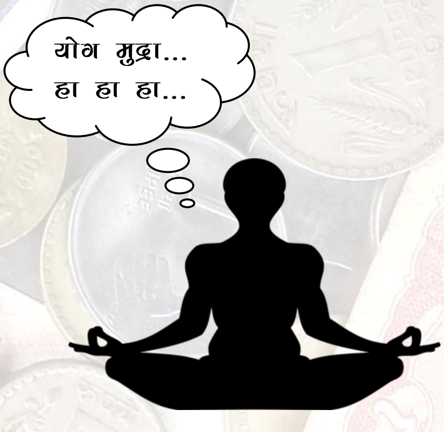

कौड़ी

कौड़ी समुद्र में पायी जाने वाली एक प्रकार के घोंघा का अस्थि कोश है। इसका कुबड़नुमा मोटा खोल रंगीन और चमकदार होता है। इनके सुराखदार होंठ जो खोल के पहले चक्कर में खुलते हैं, अन्दर की तरफ मुड़े होते हैं। यह मुख्य रूप से हिन्द और प्रशान्त महासागर के तटीय जल में मिलती है। प्राचीन काल में लोग इसे आभूषण के तौर पर गले में पहना करते थे। भारत में कौड़ी का प्रयोग मुद्रा के तौर पर किया जाता था। इसका कारण यह था कि इसे आसानी से एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाया जा सकता था। यह जल्दी नष्ट भी नहीं होता था। कोई नकली कौड़ी बना भी नहीं सकता था। इसे गिनने में आसानी भी होती थी। और तो और, यह फूट भी जाता था तो मुद्रा के तौर पर काम आता था। आपको जानकर आश्चर्य होगा कि विश्व भर में करीब डेढ़ सौ किस्म की कौड़ियां पायी जाती हैं, लेकिन मुद्रा के तौर पर सिर्फ दो प्रकार के कौड़ी का ही उपयोग किया जाता था। उनमें पहला था– 'मनी कौड़ी' यानी 'साइप्रिया मोनेटा' और दूसरा 'रिंग कौड़ी' यानी 'साइप्रिया अनेलस'। भारत तथा एशिया के कुछ भागों में 'मनी कौड़ी' का ही इस्तेमाल किया जाता था। यह कौड़ी हल्के पीले रंग की होती थी। जबकि अफ्रीका में दोनों प्रकार के कौड़ियों का प्रयोग मुद्रा के तौर पर किया जाता था।

विशिष्ट सिक्के–

प्राचीन काल में राजाओं या सरदारों ने– जिन्होंने भी अपने सिक्के चलाये, अपनी चित्र उनपर मुद्रित करवानी शुरू कर दी। कभी–कभी कोई नये शासक पुराने सिक्कों के दूसरी तरफ अपना नाम खुदवा देते थे। भारत में भी संभवतः ग्रीक राजाओं की देखा–देखी ऐसे सिक्के बनने लगे। कुछ शासकों ने अपने शासनकाल की कुछ विशेष घटनाओं की स्मृति में सिक्के को ढलवाया। ऐसे सिक्के गुप्तकाल के (चौथी–पाँचवीं सदी के) अपने देश में पाये गये हैं। राजा विक्रमादित्य के काल में भी सोने के सिक्के बहुतायत से बनते थे।

कौटिल्य के अर्थशास्त्र से मौर्यकालीन मुद्राओं के प्रचलन का पता चलता है। मौर्य काल में कई प्रकार के सिक्के चला करते थे। 'पण्य', 'कर्षापण' या 'धरण' चाँदी एवं ताँबे के सिक्के हुआ करते थे। एक कर्षापण का वजन 146.4 ग्रेन था। 'सुवर्ण' सोने का सिक्का, 'भाषक' ताँबे का सिक्का, 'काकणी' ताँबे का सिक्का हुआ करता था। सोने का सिक्का 'सुवर्ण' 35 चाँदी के सिक्कों के बराबर था।

सर्वप्रथम स्वर्ण सिक्कों को प्रचलित करने का श्रेय कुषाण शासक विम कडफिसेस को दिया जाता है। विम के चलाये गये सिक्कों पर शिव या नंदी त्रिशूल की आकृति उत्कीर्ण है। कनिष्क के स्वर्ण सिक्के तौल में रोमन सिक्कों (लगभग 124 ग्रेन) के बराबर हैं। कुषाण राजाओं के सिक्कों के अग्रभाग पर ईरानी वेश–भूषा में शासक की आकृति तथा उपाधि के साथ नाम उल्लिखित है।

गुप्तकालीन शासकों ने सोने का सिक्का चलाया जिसे 'मोहर' कहा जाता था।

भारत में तुर्क शासनकाल में सिक्कों को टंका कहा जाता था। अभी भी बांग्ला, मैथिली और उड़िया भाषा में रुपये को 'टका ही कहते हैं।

व्यापारी एक देश का सिक्का दूसरे देश तक पहुँचाने का काम करते थे। बहुत से रोमन सम्राटों के स्वर्ण मुद्राएं भी भारत में मिले हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि प्राचीन काल में भारत में रोम के साथ व्यापार होता था।

जैसे–जैसे आवश्यकताएं बढती गईं, कीमती धातुओं की जगह अन्य वस्तुओं का उपयोग भी सिक्के बनाने के लिए करने लगे। चीनियों ने पहले–पहल कागज का ही अविष्कार नहीं किया, उसके सिक्के भी चलाये। हुमायूँ की जान बचाने वाला भिश्ती ने तो चमड़े तक का सिक्का चला दिया।

फिर भी, लोगों के इसमें दिक्कत का सामना करना पड़ा। जैसे– धातु मुद्रा भारी होता है जिसे बटुए में रखने में परेशानी होती है। अगर बटुआ फट गया तो नुकसान का सामना करना पड़ सकता है। इन्हें बनाने मे भी ज्यादा खर्च आता है, क्योंकि धातु महँगी होती हैं। यह ज्यादा स्थान घेरती है जिससे रख–रखाव में परेशानी होती है। पुराने समय में, जंगलों या सुनसान इलाकों से यात्रा के समय, इसे छिपाने में भी परेशानी होती थी, चोर–लूटेरे का भय रहता था।

कागज़ी मुद्रा–

सिक्कों के रख–रखाव में परेशानी होने के बाद कागज की मुद्रा का आगमन हुआ। यह बहुत हल्का और ढ़ोने में आसान था। यह मुद्रा अपने आप में अनोखा था। किसी व्यक्ति को जब एक जगह से दूसरी जगह अधिक मात्रा में धात्विक मुद्रा ले जाना होता था तो वह धात्विक मुद्रा को अपने साथ ले जाने के बदले किसी विख्यात व्यापारी के यहां जमा कर देता। बदले में व्यापारी उसे एक लिखित प्रमाण पत्र देता। धीरे–धीरे व्यापारियों के बीच यह प्रथा विकसित हो गयी। चुँकि ये व्यापारी अपने–अपने इलाके में प्रसिद्ध थे, अतः इनके द्वारा जारी प्रमाण पत्रों का प्रयोग कर सभी वस्तुओं को खरीद–बिक्री में प्रयोग करने लगे। अंत में जो भी इन प्रमाण पत्रों को लेकर वापस व्यापारी के पास आता, व्यापारी उतने धात्विक मुद्राएं उन्हें प्रदान कर देता था। इस पत्र मुद्रा का सर्वप्रथम प्रयोग चीन में प्रारंभ हुआ था। आज भी भारतीय नोटों पर यह लिखा होता है कि "मैं धारक को ..... रुपये अदा करने का वचन देता हूँ।"

ब्रिटिश काल की मुद्रायें

ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने वर्ष 1800 से 1947 तक कई प्रकार के सिक्के जारी किये। सबसे पहले सन् 1835 में आधा आना का ताँबा का सिक्का जारी किया गया था। फिर महारानी विक्टोरिया का चित्र दर्शाता एक क्वाटर आना का सिक्का जारी किया गया। यह सिक्का शुद्ध ताँबे का था।

भारत की सबसे पहली कागजी मुद्रा कलकत्ता के बैंक ऑफ हिंदोस्तान ने 1770 में जारी की थी। इन ब्रिटिश कंपनियों का व्यापार जब बंगाल से बढ़कर बॉम्बे, मद्रास तक पहुंच गया, तब इन जगहों पर अलग–अलग बैंकों की स्थापना शुरू हुई। वर्ष 1773 में बैंक ऑफ बंगाल और बिहार की स्थापना हुई। वहीं 1886 में प्रेसीडेंसी बैंक की स्थापना हुई। अब जब देश में बैंक बढ़े, तो कागजी मुद्रा का चलन भी आम हो गया। बैंक ऑफ बंगाल द्वारा तीन सीरीज में नोट छापे गये। पहली सीरीज एक स्वर्ण मुद्रा के रूप में छापी गयी यूनिफेस्ड सीरीज थी। यही सीरीज कलकत्ता में सिक्सटीन सिक्का रूपये के तौर पर छापी गयी। दूसरी सीरीज कॉमर्स सीरीज थी, जिस पर एक तरफ नागरी, बंगाली और उर्दू में बैंक का नाम लिखने के साथ ही एक महिला की तस्वीर भी छपी थी और दूसरी तरफ बैंक का नाम लिखा था। तीसरी सीरीज 19 वीं सदी के अंत में छापी गयी, जिसे ब्रिटैनिका सीरीज कहा गया। उसके पैटर्न में बदलाव होने के साथ ही कई रंगों का प्रयोग किया गया।

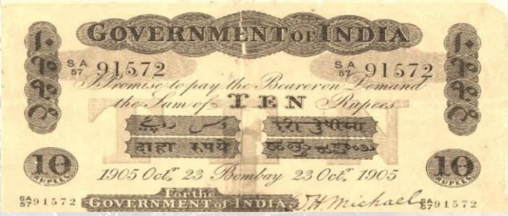

वर्ष 1861 में तत्कालीन ब्रिटिश सरकार ने विक्टोरिया पोर्ट्रेट सीरीज के तहत अपना कागजी मुद्रा जारी करना शुरू किया। सभी नोटों पर महारानी विक्टोरिया की छोटी सी तस्वीर लगी होती थी। बाद में यही मुद्रा भारत सरकार की अधिकारिक मुद्रा बनी। वर्ष 1923 में ब्रिटिश सरकार की कागजी मुद्रा पर किंग जॉर्ज पंचम का चित्र भी छपा। वर्ष 1935 में ब्रिटिश सरकार ने रूपये जारी करने का अधिकार रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया को दे दिया। इसके बाद रिजर्व बैंक द्वारा 1938 में पहली बार नोट जारी किया गया।

पुर्तगाली मुद्रा–

वर्ष 1906 में पुर्तगाल के कब्जे वाले भारतीय इलाकों (जैसे गोवा, दमन और दीव) में पेपर मनी जारी करने की जिम्मेवारी 'बैंकों नेशनल अल्ट्रमरीनों' की थी। शुरूआती समय में इन नोटों पर जारी करने वाले बैंक की मोहर होती थी। पेपर करेंसी के तौर पर जारी किये गये इंडो–पुर्तगीज नोट को 'रुपिया' कहा गया था जो वर्ष 1883 के करीब चलन में आया था।

फ्रांसीसी मुद्रा–

तमिलनाडु के कराइकल, आंध्रप्रदेश का यनम, पुदुचेरी, केरल के माहे और पश्चिम बंगाल का चंद्रनगर फ्रांस के उपनिवेश थे। इन फ्रेंच कॉलोनियों में कागजी मुद्रा जारी करने की जिम्मेवारी बैंक ऑफ इंडोशाइन को थी। इसमें एक रुपये का नोट पहला विश्व युद्ध के बाद और पाँच रुपये के नोट वर्ष 1937 के बाद जारी किये गये थे। इनमें मोजियर डुप्ले (भारत में फ्रांसीसी साम्राज्य के संस्थापक) के नाम से जारी किये गये 50 रुपये के नोट को खास तरीके से डिजाइन किया गया था।

हैदराबाद एक मात्र ऐसा राज्य था जिसके पास वर्ष 1916 से अपनी कागजी मुद्रा संचलन में था और वह वर्ष 1952 तक प्रचलन में रहा। ये नोट वर्ष 1939 तक प्रिंट किये गये थे। ये नोट उर्दू और वहां के अन्य स्थानीय भाषाओं (कन्नड़, तेलुगु, मराठी आदि) में प्रिंट किये गये थे।

- प्रारंभ में नोटों पर केवल एक तरफ ही छपाई होता था।
- 1864 में 5 रुपये तथा 1899 में 10 रुपये का कागजी नोट प्रचलन में आया।
- 1928 में नासिक में भारत का पहला प्रिंटिंग प्रेस लगाये जाने के पहले तक सारी कागजी मुद्राएं बैंक ऑफ इंग्लैंड से छप कर आती थी। चार सालों के भीतर सभी भारतीय नोट इसी जगह से छापे जाने लगे थे। 1928 के पहले सभी बैंक नोटों को बैंक ऑफ इंग्लैंड द्वारा मुद्रित किया जाता था।
- 1942 में पाई की छपाई बंद हो गई।
- वर्ष 1944 में जापानियों द्वारा नकली नोट बनाये जाने के डर से रिजर्व बैंक ने नोटों में पहली बार सुरक्षा धागे और वाटरमार्क का प्रयोग हुआ।

- भारत के आजादी के बाद नोटों में ब्रिटेन के राजा के चित्र को हटाकर महात्मा गांधी के चित्र को लगाने पर विचार किया गया। लेकिन अंतिम तौर पर सारनाथ के सिंहों वाले अशोक स्तंभ की तस्वीर को ही चुना गया।
- आजादी के बाद सिक्का पर से ब्रिटिश सम्राट की तस्वीर हटा ली गई। भारत से अलग होने के कुछ महीनों के बाद तक पाकिस्तान ने भारतीय मुद्रा पर ही अपनी मुहर लगा कर प्रयोग में लाता था।
- आजाद भारत का पहला नोट 1 रुपया का था, जो सन् 1949 में छापा गया था।
- वर्ष 1950 में पहली बार स्वतंत्र भारत की 2, 5, 10 और 100 रुपये मूल्यवर्ग की नोट छापी गयी।
- वर्ष 1953 में भारत सरकार द्वारा जो नोट छापा गया उस पर हिन्दी भाषा में भी लिखा गया।
- वर्ष 1954 में उच्च मूल्यवर्ग यानी 1000, 5000 और 10000 रुपये की नोट पुनः छापी गयी। लेकिन 1978 में इसे संचलन से हटा लिया गया।
- पहले ब्रिटिश रुपया (11.66 ग्राम) 16 आने या 64 पैसे या 192 पाई में बाँटा जाता था। यानी 1 आना, 4 पैसे या 12 पाई में विभाजित था।
- वर्ष 1957 में आना सिस्टम समाप्त कर दिया गया। इस समय तक रुपया चार आने, आठ आने, 16 आने में विभाजित था।
- भारत में रुपये का दशमलवीकरण 1957 ई. में हुआ। इससे भारतीय रुपया 100 पैसों में विभाजित कर दिया गया। इस प्रकार, भारतीय मुद्रा की सबसे छोटी इकाई पैसा है। दशमलवीकरण के बाद चार आने– 25 पैसे तथा आठ आने– 50 पैसे में बदल गया। प्रारंभ में 1, 2, 5, 10, 25, 50 नये पैसे के सिक्के ढाले जाते थे। एक नया पैसा ताँबे का बना होता था। जबकि 2, 5, 10 नये पैसे सिक्का कॉपर–निकेल मिश्र धातु से बना होता था।

आजाद भारत में पहला सिक्का 15 अगस्त, 1950 को जारी किया गया था। इस समय एक रुपया, आधा रुपया और चार आना (क्वॉटर रुपया) निकेल का ढ़ाला गया था। जबकि दो आना, एक आना और आधा आना कॉपर–निकेल का बना होता था। एक पैसा पीतल का बनाया गया था।

1 अप्रैल 1957 से भारत में आना प्रणाली को हटाकर दशमलव प्रणाली को अपनाया गया। इस समय बने सिक्के के अग्र भाग पर 'नया पैसा' लिखा होता था।

वर्ष 1957 से 1964 तक की मुद्रायें

- इस समय 1 रुपया निकेल धातु का बनाया गया था जो वजन में 10 ग्राम और 28 मिमी. व्यास वाला गोलाकार सिक्का था। इसके अग्र पृष्ठ पर दो गेहूँ की बाली का चित्र उकेरा गया था।
- 50 नये पैसे भी निकेल के बने थे। जिसका वजन 5 ग्राम के बराबर था। इसके अग्र पृष्ठ पर ऊपर 'रूपये का आधा भाग' तथा नीचे 'नये पैसे' और ढलाई का वर्ष लिखा होता था। इस गोलाकार सिक्के का व्यास 24 मिमी. था।
- 25 नये पैसे भी निकेल के बने थे। जिसका वजन 2.5 ग्राम के बराबर था। इसके अग्र पृष्ठ पर ऊपर 'रूपये का चौथा भाग' तथा नीचे 'नये पैसे' और ढलाई का वर्ष लिखा होता था। इस गोलाकार सिक्के का व्यास 19 मिमी. होता था।
- 10 नये पैसे कॉपर–निकेल धातु के बने होते थे। इसका वजन 5 ग्राम था। यह आठ लहरदार किनारे वाला था। इसके अग्र पृष्ठ पर ऊपर 'रूपये का दसवां भाग' तथा नीचे 'नये पैसे' और ढलाई का वर्ष लिखा होता था।
- 5 नये पैसे भी कॉपर–निकेल धातु के बने होते थे। इसका वजन 4 ग्राम था। यह वर्गाकार सिक्का था। इसके अग्र पृष्ठ पर ऊपर 'रूपये का बीसवां भाग' तथा नीचे 'नये पैसे' और ढलाई का वर्ष लिखा होता था।
- 2 नये पैसे भी कॉपर–निकेल धातु के बने होते थे। इसका वजन 3 ग्राम था। यह 8 लहरदार किनारे वाला सिक्का था। इसके अग्र पृष्ठ पर ऊपर 'रूपये का पचासवां भाग' तथा नीचे 'नये पैसे' और ढलाई का वर्ष लिखा होता था।
- 1 नये पैसे पीतल के बने थे। जिसका वजन 1.5 ग्राम के बराबर था। इसके अग्र पृष्ठ पर ऊपर 'रूपये का सौवां भाग' तथा नीचे 'नया पैसा' लिखा होता था। इस गोलाकार सिक्के का व्यास 16 मिमी. होता था।
- वर्ष 1964 से सिक्कों पर से 'नये पैसे' शब्द हटा दिये गये। इस समय धातुओं के मूल्य में वृद्धि होने के कारण एल्युमिनियम का इस्तेमाल किया गया। इस समय 3 पैसे के सिक्के जारी किये गये जो षट्भुजाकार थे और वजन 1.25 ग्राम था।

'रुपया' शब्द की उत्पत्ति संस्कृत शब्द 'रूप' या 'रूप्याह' में निहित है, जिसका अर्थ है– चाँदी।

'रुपया' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग शेरशाह सूरी ने अपने शासनकाल में 1541 ई. में किया था। शेरशाह सूरी ने अपने समय में जो रुपया चलाया वह एक चाँदी का सिक्का था। जिसका भार लगभग 178 ग्रेन (11.534 ग्राम) था। इस चाँदी के सिक्के में 92 प्रतिशत चाँदी और शेष अन्य मिश्रित धातु थे। उसने ताँबे का सिक्का (जिसे दाम कहा जाता था) तथा सोने का सिक्का (जिसे मोहर कहा जाता था) भी चलाया।

- वर्ष 1965 में सभी सिक्कों पर से 'रूपये का चौथा भाग', 'रूपये का दसवां भाग' जैसे विस्तृत शब्द हटा दिये गये। और हिन्दी तथा अंग्रेजी में 'पैसे' 'Paise' लिखा जाने लगा।
- इस समय सिक्कों के वजन में भी कमी की गयी। 10 पैसे के सिक्के का वजन 2.3 ग्राम, 2 पैसे का वजन 1 ग्राम और 1 पैसा का वजन 0.75 ग्राम कर दिया गया।
- इस समय पैसे से कम मूल्यवर्ग के सिक्कों को एल्युमिनियम–मैगनीशियम धातु को मिलाकर बनाया गया था।
- वर्ष 1968 में 20 पैसे का सिक्का पहला बार जारी किया गया। यह भी एल्युमिनियम–मैगनीशियम धातु को मिलाकर बनाया गया था। इसका वजन 2.2 ग्राम तथा आकार षट्भुजाकार था। लेकिन यह ज्यादा लोकप्रिय नहीं हुआ।
- बाद के दशकों में सिक्कों का वजन और भी घटा दिया गया। कॉपर–निकेल से बनी 1 रुपया के सिक्के भार 6 ग्राम, एल्युमिनियम के 10 पैसा के सिक्के को भार 1.75 ग्राम और 5 पैसे का भार 1.5 ग्राम ही रह गया।
- 70 के दशक में 1, 2 और 3 पैसे के सिक्के मुद्रित होना बंद हो गये।
- वर्ष 1972 में 20 रुपये के नोट पहली बार जारी किया गया था।
- वर्ष 1975 में 50 रुपये के नोट पहली बार जारी किया गया था।
- वर्ष 1980 में मुद्राओं के डिजाइन में बदलाव किया गया। इस समय भारतीय मुद्राओं पर भारतीय विकास (1 रुपया के नोट पर तेलशोधक रीज, पाँच रुपये के नोट पर कृषि यंत्र, 100 रुपये के नोट पर हीराकुंड बाँध), भारतीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी (2 रुपये के नोट पर 'आर्यभट्ट' उपग्रह), और भारतीय कला संस्कृति (20 रुपये के नोट पर कोणार्क रथ का पहिया, 10 रुपये के नोट पर मोर या शालीमार बाग) के चित्र छापे गये थे।
- अक्टूबर, 1987 में 500 रुपये के नोट पहली बार महात्मा गाँधी के चित्र के साथ छापे गये। इस नोट के विंडो में सारनाथ स्थित सिंह वाले अशोक स्तंभ का वाटरमार्क दिखता था।
- वर्ष 1988 में 10, 25 और 50 पैसे के स्टील के सिक्के तथा वर्ष 1992 में 1 रुपया के स्टील के सिक्के ढाले गये। 25 पैसे के सिक्के के पीछे गैंडा का चित्र और 50 पैसे के पीछे भारतीय संसद के साथ भारत का चित्र ढाला गया।
- नये स्टील के सिक्के का वजन इस प्रकार था। 10 पैसे के स्टील के सिक्के का वजन 2 ग्राम व्यास 16 मिमी., 25 पैसे के सिक्के का वजन 2.83 ग्राम व्यास 19 मिमी., 50 पैसे के सिक्के का वजन 3.79 ग्राम व्यास 22 मिमी. और 1 रुपया के स्टील के सिक्के का वजन 4.85 ग्राम व्यास 25 मिमी. कर दिया गया।
- वर्ष 1980 में 'सत्यमेव जयते' अर्थात् 'सत्य की जीत होती है' इस वाक्य को राष्ट्रीय चिह्न के अंतर्गत प्रथम बार शामिल किया गया।
- वर्ष 1982 में पहली बार 2 रुपये के सिक्के ढाले गये। जिसके पीछे भारत का नक्शा था जिसपर भारतीय झंडा फहरता दिखाया गया था। इस पर राष्ट्रीय एकता हिन्दी तथा अंग्रेजी में लिखा गया था। यह गोलाकार सिक्का कॉपर–निकेल धातु का बना हुआ था जिसका वजन 8 ग्राम और व्यास 28 मिमी. था। बाद में 2 रुपये के सिक्के को 11 कोणीय आकार में ढाला गया। वर्ष 2006 में 2 रुपये के सिक्के के गुण में बदलाव करते हुए इसको स्टील में ढाला गया। इसका आकार गोलाकार, वजन 5.62 ग्राम और व्यास 27 मिमी. हो गया।

- वर्ष 1992 में पहली बार 5 रुपये के सिक्के कॉपर–निकेल धातु के ढाले गये। इसका वजन 9 ग्राम, आकार–गोलाकार, व्यास 23 मिमी. था।
- वर्ष 1996 में महात्मा गाँधी श्रृंख्ला का नोट जारी किया गया तथा सुरक्षा के दृष्टि से कई नये फीचर जोड़े गये।
- महात्मा गांधी श्रृंख्ला बैंक नोट–
  वर्ष 1996, जून में महात्मा गांधी श्रृंख्ला के 10 रुपये तथा 100 रुपये मूल्यवर्ग के नोट जारी किये गये। वर्ष 1997 में 50 तथा 500 मूल्यवर्ग, वर्ष 2000 में 1000 मूल्यवर्ग तथा वर्ष 2001 में 5 तथा 20 मूल्यवर्ग के महात्मा गांधी श्रृंख्ला के नोट जारी किये गये। इन नोटों में महात्मा गांधी के चित्र के साथ विंडों में महात्मा गांधी वाटर मार्क भी लगाया गया।
- 9 अक्टूबर 2000 को पुनः 1000 रुपये के नोट जारी किये गये।
- 18 नवम्बर 2000 को 500 रुपये के नोट के रंग तथा डिजाइन में बदलाव कर जारी किया गया।
- वर्ष 2007–09 के दौरान इसे भी स्टील में ढाला गया। वर्ष 2009 से 5 रुपये के सिक्के निकेल–पीतल को मिलाकर ढाले जाने लगे। इसका वजन 6 ग्राम कर दिया गया।
- इसी समय पहली बार दो अलग–अलग धातुओं वाली 10 रूपये का सिक्का ढाला गया जिसके केन्द्र का भाग कॉपर–निकेल से बना तथा बाहरी छल्ला एल्युमिनियम–पीतल से बनाया गया है। इस बेहद खुबसूरत 10 रुपये के गोलाकार सिक्के का वजन 7.71 ग्राम और व्यास 27 मिमी. है।
- वर्ष 2005 में 'अनेकता में एकता' श्रृंख्ला पर 1, 2 और 10 रुपये की छपाई की गई। इसके पीछे भाग पर एक दूसरे को काटती रेखा तथा चार बिंदु देखा जा सकता है।
- वर्ष 2007 में 'नृत्य मुद्रा' श्रृंख्ला पर 50 पैसा, 1 रुपया और 2 रुपये की छपाई की गई। इन सिक्कों पर अग्र भाग में नृत्य की मुद्राएं उकेरी गई है।
- वर्ष 2002 से चवन्नी यानी 25 पैसे की ढलाई बन्द हो गयी थी। 30 जून 2011 को 25 पैसा संचलन से खत्म हो गया।
- सन् 2005 से नोटों पर छपाई की ईस्वी भी अंकित किया जाने लगा।

वर्तमान नोटों की जानकारी 2020

नोट मूल्यवर्ग (रुपये)	रंग	मोटिफ	आकार (वर्ग मिमी. में)
10	चॉकलेटी भूरा	सूर्य मंदिर, कोणार्क	63 × 123
20	हरित पीला	एलोरा गुफा	63 × 147
50	रेडियम नीला	हम्पी रथ के साथ	66 × 135
100	लेवेण्डर	रानी की वाव	66 × 142
200	चमकीला पीला	सांची स्तूप	66 × 146
500	स्टोन ग्रे	लाल किला	66 × 150
2000	मैजेण्टा	मंगलयान	66 × 166

- वर्ष 2011 में नोटों पर रुपये के नये चिह्न (₹) का प्रयोग प्रारंभ हुआ। भारतीय मुद्रा का आधिकारिक प्रतीक चिह्न 15 जुलाई 2010 को चुना गया। भारतीय मुद्रा के प्रतीक चिह्न का डिजाइन आईआईटी, गुवाहाटी के प्रोफेसर डी0 उदय कुमार ने बनाया है। यह विश्व की पाँचवी मुद्रा संकेत है। इसके पहले अमेरिका की मुद्रा डॉलर ($), ब्रिटेन की मुद्रा पाउण्ड (£), जापान की मुद्रा येन (¥) और यूरोपीय संघ की मुद्रा यूरो (€) की अपनी विशेष संकेत है। प्रतीक चिह्न अपनाने के पहले रुपये को दर्शाने के लिए हिन्दी में 'रु0' तथा अंग्रेजी में Rs., Re., और Rp. का प्रयोग किया जाता था।

डिजिटल मुद्रा– बिट कॉइन एक विकेंद्रीकृत डिजिटल मुद्रा है। कम्प्यूटर नेटवर्किंग आधारित भुगतान हेतु इसे निर्मित किया गया है। यह किसी केन्द्रीय बैंक द्वारा संचालित नहीं होता है।

- वर्ष 2015 में 100 रुपये तथा उससे उच्च मूल्यवर्ग के नोटों पर ब्लेड जैसा लाइन जोड़ा गया।
- वर्ष 2015 में एक बार फिर से 1 रुपया का नोट जारी किया गया।
- 8 नवम्बर, 2016 को तत्कालीन प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 500 तथा 1000 रुपये के उच्च मूल्यवर्ग के नोटों को संचलन से वापस ले लिया। उसके स्थान पर 2000 रुपये के नये नोट जारी किये गये।
- 23 अगस्त 2017 को पहली बार भारत में 200 रुपये का नोट जारी किया गया।
- महात्मा गाँधी (नया) श्रृंखला की 10, 20, 50, 100, 200, 500 और 2000 रुपये के नोट जारी किया गया। इन नोटों के डिजाइन, रंग, सुरक्षा लक्षण में काफी बदलाव किया गया है।
- वर्ष 2017 में जारी 2000 और 500 के नोटों पर 'स्वच्छ भारत' अभियान का चिह्न है।
- बाजार में कितनी करेंसी है, इस बात को जानने के लिए नोटों पर सिरियल डाला जाता है।

मुद्रा चाहे सिक्का हो या कागजी नोट, सोने की हो या चाँदी की, या किसी अन्य धातु की, अपने आप में उसकर कोई कीमत नहीं होती है। उसकी कीमत इस बात पर निर्भर होती है कि उससे कोई सामान कितना मिलता है, और दूसरा कि वह मुद्रा संचलन में है अथवा नहीं। उदाहरण के लिए पहले जब 25 पैसे, 50 पैसे या 1000 रुपये संचलन में थे तब उससे कोई भी सामान खरीदा जा सकता था। लेकिन अब उस मुद्रा से कोई सामान नहीं मिलेगा, क्योंकि सरकार ने उस मुद्रा का संचलन समाप्त कर दिया है। यानी अब वे सिर्फ धातु के टुकड़े या कागज के सामान हैं।

क्या आप जानते हैं?

- भारतीय रुपये को हिन्दी में रुपया, गुजराती में रुपियो, तेलुगू और कन्नड़ में रुपाई, तमिल में रुबाई, मलयालम में रुपा, मराठी में रुपये तथा संस्कृत में रूप्यकमं के नाम से पुकारा जाता है। बंगाली में भारतीय मुद्रा को टका, असमिया में तोका और उड़िया में टंका कहा जाता है।
- भारत के अलावा रुपया पाकिस्तान, श्री लंका, नेपाल, मॉरीशस, सेशल्स में भी चलता है। इंडोनेशिया की मुद्रा का नाम रुपिया तथा मालदीव की मुद्रा का नाम रुफियाह है।

- 1 रुपया के नोट की छपाई भारत सरकार के वित्त मंत्रालय द्वारा किया जाता था। इस पर भारत सरकार के वित्त सचिव का हस्ताक्षर होता है। इससे अधिक मूल्य वर्ग के नोटों की छपाई भारतीय रिजर्व बैंक करती है।
- नोटों पर उसका मूल्य हिन्दी और अंग्रेजी के अतिरिक्त 15 अन्य भाषाओं (कश्मीरी, मलयालम, मराठी, उड़िया, नेपाली, पंजाबी, संस्कृत, तेलुगु, उर्दू, तमिल, कन्नड़, असमी, कोंकणी, गुजराती और बंगाली) में लिखा होता है।

कौटिल्य के अर्थशास्त्र से ज्ञात होता है कि मुद्रा निर्माण पर पूर्णतः राजाओं का नियंत्रण और अधिकार होता था। भारतीय मुद्रा छापने का अधिकार केवल भारत सरकार को है और यह कार्य भारतीय रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया के नियंत्रण में होता है। भारत में कागजी मुद्रा की छपाई चार जगहों पर होती है–

1. देवास– मध्य प्रदेश 2. नसिक– महाराष्ट्र 3. मैसूर– कर्नाटक 4. सल्बोनी– पश्चिम बंगाल

भारत में सिक्को की ढलाई निम्न स्थानों पर भारतीय रिजर्व बैंक करती है–

1. अलीपुर (कोलकाता) 2. मुम्बई 3. चेरलापली (हैदराबाद) 4. नोएडा (उत्तर प्रदेश)

अगर आप सिक्के के ढलाई के वर्ष के नीचे ध्यान देंगे तो आपको पता चल जाएगा कि सिक्का कहां बना है। यदि वर्ष के नीचे डायमंड का निशान है तो सिक्का हैदराबाद में ढला है। यदि बिन्दु का निशान है तो सिक्का नोएडा में ढला है।

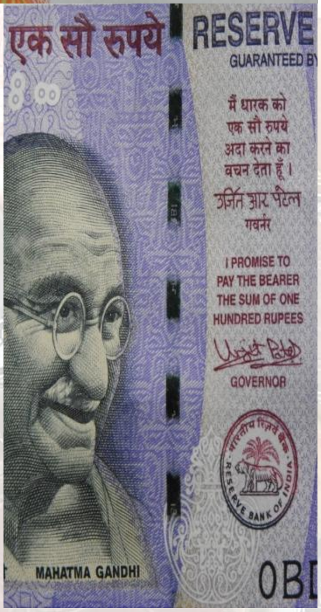

प्रश्न–बैंकनोटों की विभिन्न श्रृंख्लाएँ मुद्रित क्यों की जाती है?

जबाब– नोटों के जालसाजी या जालीकरण को रोकने के लिए समय–समय पर सरकार द्वारा नोटों के डिजाइन या सुरक्षा व्यवस्था में परिवर्तन किया जाता है।

प्रश्न– वर्तमान में 1, 2 या 5 मूल्यवर्ग के बैंकनोट क्यों मुद्रित नहीं किये जा रहे हैं?

जबाब–छोटे मूल्यवर्ग के नोटों का ज्यादा इस्तेमाल किया जाता हैं जिससे उसकी आयु 1 वर्ष से भी कम होती है। अर्थात् एक नया नोट संचलन में आने के एक वर्ष के बाद कटा–फटा, गंदा हो जाता है। इन बैंक नोटों की लागत के हिसाब से उनकी आयु कम है। अतः भारतीय रिजर्व बैंक 1, 2, और 5 के नोटों के स्थान पर सिक्के जारी कर रही है। वर्ष 2005 से 5 रुपये के नोटों की छपाई बन्द कर दी गई है।

क्या आप जानते हैं?

- वर्तमान में भारतीय रिजर्व बैंक के गर्वनर शक्तिकांत दास हैं।
- वर्तमान में भारत के वित्त सचिव, अजय भूषण पाण्डेय हैं।

क्या आप जानते हैं?

- भारत के पूर्व प्रधानमंत्री (2004–2014) श्री मनमोहन सिंह भारतीय रिजर्व बैंक के गर्वनर (16 सितम्बर 1982 से 14 जनवरी 1985 तक) भी रह चुके हैं।
- भारतीय रिजर्व बैंक के पहले गर्वनर ऑसबोर्न स्मिथ (कार्यकाल– 1अप्रैल 1935 से 30 जून 1937) थे।
- भारत के स्वतंत्रता के समय भारतीय रिजर्व बैंक के गर्वनर सी. डी. देशमुख (कार्यकाल– 11 अगस्त 1943 से 30 जून 1949) थे।
- 10 रुपये का सिक्का ढालने का खर्च 6.10 पैसा आता है।
- बांग्लादेश में ब्लेड बनाने के लिए 5 रुपये के सिक्के की तस्करी की जाती थी। 5 रुपये के एक सिक्के से 6 ब्लेड बनते थे और प्रत्येक ब्लेड की कीमत 2 रुपये थी। इस बात की जानकारी भारत सरकार को पता चला तो उसने सिक्का बनाने में इस्तेमाल होने वाले धातु को ही बदल दिया।

मुद्रा (Currency)

मुद्रा

मुद्रा धन के उस स्वरूप को कहते हैं, जिससे दैनिक जीवन की वस्तुएं खरीदी या बेची जाती हैं। इसके अंतर्गत सिक्का और नोट दोनों आते हैं।

मुद्रा की परिभाषा–

- ''मुद्रा वह है जो मुद्रा का कार्य करे।'' – वॉकर
- ''मुद्रा वह है जो मूल्य का मापक हो और भुगतान का साधन हो। '' – कार्लर्बोन
- ''मुद्रा ऐसी वस्तु है जो विनिमय के माध्यम के रूप में हस्तांतरित होती है और ऋणों के अंतिम भुगतान के रूप में सामान्य रूप से ग्रहण भी करती है।'' – ऐली

किसी देश की मुद्रा उस देश की स्वतंत्रता की निशानी होती है। जब भारत अंग्रेजों का गुलाम था, तब भारत में चलने वाली मुद्राओं पर इंग्लैंड के राजा अथवा रानी की तस्वीर छपी होती थी। भारत के आजादी के बाद भारतीय मुद्राओं पर अंग्रेज सम्राट का चित्र हटाकर उसपर अशोककालीन चार सिंहों का चिह्न छापी गयी।

विभिन्न देश समय समय पर अपनी मुद्राओं की कीमत घटाते बढ़ाते रहते हैं। जब हम कहते हैं कि महँगाई बढ़ गई तब हमारा मतलब होता है कि रुपयों की निश्चित राशि से पहले जितना सामान मिलता था, अब उससे कम मिलता है।

देश और मुद्रा

देश	मुद्रा
अफगानिस्तान	अफगानी
बांग्लादेश	टका
भूटान	न्गुलट्रम
चीन	युआन
ईरान	रियाल
इजराइल	शेकेल
इराक	इराकी दिनार
कुवैत	कुवैती दिनार
मलेशिया	रिनगिट
म्यांमार (बर्मा)	क्यात
फिलीपीन	पीसो
कतर	रियाल
सउदी अरब	रियाल
सिंगापुर	डॉलर
यूनाइटेड किंगडम	पौण्ड स्टर्लिंग
स्विट्जरलैण्ड	स्विस फ्रैंक
स्वीडन	क्रोना
स्पेन	यूरो
पुर्तगाल	ऐस्कुडो
पौलैण्ड	यूरो
अल्बानिया	लेक
ऑस्ट्रिया	शिलिंग
टर्की	लीरा
रूस	रूबल

देश और मुद्रा

देश	मुद्रा
संयुक्त अरब अमीरात	दिरहम
वियतनाम	डोंग
डेनमार्क	क्रोन
फिनलैंड	मार्क
फ्रांस	यूरो
जर्मनी	यूरो
ग्रीस (यूनान)	ड्रच्मा
इटली	यूरो
नीदरलैंड	गिल्डर
मिस्र (इजिप्ट)	इजिप्टियन पौण्ड
थाइलैण्ड	वाह्ट
घाना	सेडी
केन्या	शिलिंग
मोरक्को	दिरहम
नाइजीरिया	नेइरा
दक्षिण अफ्रीका	राण्ड
जाम्बिया	क्वाचा
कनाड़ा	कनाडियन डॉलर
हैती	गूर्ड
मैक्सिको	न्यू पेसो
ब्राजील	क्रुजेरो
अमेरिका	डॉलर
ऑस्ट्रेलिया	ऑस्ट्रेलियन डॉलर
वेनेजुएला	बोलिवर

मुद्रा पद्धति
(Currency System)

प्राचीन पद्धति

3 फूटी कौड़ी = 1 कौड़ी

10 कौड़ी= 1 दमड़ी

2 दमड़ी = 1 धेला

1 धेला = 1.5 पाई

3 पाई = 1 पैसा

4 पैसा = 1 आना

16 आना = 1 रुपया

1 रुपया = 265 दमड़ी

265 दमड़ी = 192 पाई

64 पैसा = 128 धेला

64 पैसा = 16 आना

आधुनिक पद्धति

1 रुपया = 100 पैसा

क्या आप जानते हैं?

- सिक्कों के अध्ययन को *न्यूमिस्मैटिक* कहते हैं।

मुद्रा पर आधारित मुहावरे

- **कौड़ी के तीन होना–** दीनहीन, असहाय, अपमानित होना, बेकदर होना, बहुत सस्ता होना।
- **कौड़ी–कौड़ी को मुहताज–** अत्यंत गरीब
- **कौड़ी–कौड़ी चुकाना–** लिया हुआ कर्ज पूरा वापस करना
- **एक कौड़ी भी बाकी न रखना–** ऋण पूरा वापस करना
- **कफ़न को कौड़ी न होना–** बहुत गरीब होना
- **कौड़ियों के मोल बिकना–** बहुत सस्ता बिकना
- **कौड़ी को न पूछना–** बहुत तुच्छ समझना
- **कौड़ी–कौड़ी दाँतों से पकड़ना–** बहुत कंजूस होना
- **कौड़ी–कौड़ी जोड़ना–** छोटी–मोटी सभी आय को कंजूसी से बचाकर रखना
- **कौड़ी काम का न होना–** किसर काम के न होना, मूल्यहीन वस्तु
- **कौड़ी फिरना–** जुए में अपना दांव फिरने लगना
- **कौड़ी जलाना–** भूख या क्रोध आदि से शरीर में ताप होना
- **कौड़ी–कौड़ी पर जान देना–** कंजूस होना
- **कानी कौड़ी न होना –** दरिद्र होना
- **कौड़ी फेरा करना या लगाना–** जल्दी–जल्दी और बार–बार आते–जाते रहना
- **कौड़ी का हो जाना–** मान–मर्यादा नष्ट होना
- **खोटा सिक्का–** अयोग्य पुत्र
- **दो कौड़ी का–** तुच्छ प्राणी
- **सिक्का जमाना–** प्रभुत्व स्थापित करना
- **सवा सोलह आने सही–** पूरी तरह सत्य होना

लोकोक्ति

- **नौ नगद न तेरह उधार–** उधार की तुलना में कम दाम पर नगद बेचना अच्छा है।

मुद्रा का पर्यायवाची शब्द – करेंसी, वित्त, रुपया, अर्थ, धन, पैसा, संपत्ति, द्रव्य, दौलत आदि।

मुद्रा से संबंधित शब्दावली

- **Black Money (कालाधन)–** अवैधानिक तरीको से कमाया गया वह धन जिसका लेखापत्रों में कोई उल्लेख नहीं होता और उस पर कोई कर नहीं दिया जाता है।
- **Hot Money (उष्ण मुद्रा)–** वह मुद्रा उष्ण मुद्रा कहलाती है जिसकी विनिमय दर के गिरने की सम्भावना हो या गिर रही हो। इस कारण इस मुद्रा को स्वीकार करने में लोग हिचकते हैं।
- **Call Money (कॉल मनी)–** किसी कम्पनी द्वारा जब शेयर जारी किये जाते हैं तो शेयर के मूल्य का एक भाग शेयर आवेदनकर्ता से आवेदन पत्र के साथले लिया जाता है तथा बची हुई राशि निश्चित तिथि तक किश्तों में माँगी जाती है, इसे कॉल मनी कहते हैं।
- **Cheque (चैक)–** चैक एक प्रकार का विनिमय हुण्डी होती है जो एक निर्दिष्ट या विशिष्ट बैंक के ऊपर आधारित होती है तथा जिसकी माँग पर ही भुगतान किया जाता है।
- **Deflation (मुद्रा संकुचन)–** जब मुद्रा की कमी के कारण कीमतें गिर जाती हैं, फलस्वरूप उत्पादन और व्यापार गिर जाता है और बेकारी बढ़ती है तो यह अवस्था 'मुद्रा संकुचन' कहलाती है।
- **Inflation (मुद्रा स्फीति)–** जब अन्य देशों की मुद्रा की तुलना में मुद्रा का मूल्य गिर जाने से कीमतें बढ़ जाती है तो वह मुद्रा स्फीति की स्थिति होती है।
- **Money Market (मुद्रा बाजार)–** वस्तु बाजारों की ही तरह मुद्रा बाजार वह स्थान होता है, जिसमें मुद्रा का लेन–देन किया जाता है।
- **Demonetization (विमुद्रीकरण)–** विमुद्रीकरण की विधि का प्रयोग तब होता है जब देश में कालाधन बहुत बढ़ गया हो और अर्थव्यवस्था के लिए खतरा बन गया हो। इस स्थिति में पुरानी मुद्रा के जगह नयी मुद्रा चालु कर दी जाती है, जिससे कालाधन समाप्त हो जाता है।
- **Soft Currency (उदार मुद्रा)–** जब अंतर्राष्ट्रीय बाजार में किसी मुद्रा की माँग की तुलना में पूर्ति अधिक होती है तो यह मुद्रा सॉफ्ट करेंसी कहलाती है।

आपको यह अंक कैसा लगा? अपने सलाह और सुझाव दें–

शशिधर उज्ज्वल, शिक्षक
रा0 मध्य विद्यालय, सहसपुर
प्रखण्ड– बारूण, जिला– औरंगाबाद, राज्य– बिहार,
पिन– 824112
माबाइल न0 – 7004859938
ई मेल– ujjawal.shashidhar007@gmail.com

टीचर्स ऑफ बिहार
वेबसाइट– www.teachersofbihar.org
ई–मेल– teachersofbihar@gmail.com
मोबाइल न0 – 7250818080